Tender Heart High School, Sector-33B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय
पाठ-5 'महाभारत की एक साँझ' लेखक भारत भूषण अग्रवाल
(उत्तर कुंजी)

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

(iv) "अरे पामर ! तेरा धर्म तब कहाँ चला गया था जब एक निहत्थे बालक को सात-सात ——— धिक्कार है तेरे ज्ञान को, धिक्कार है तेरी वीरता को।" (पाठ्य पुस्तक पृष्ठ संख्या 72- पहला अनुच्छेद)

प्रश्न (क) 'पामर' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? क्या आप इस संबोधन को उचित मानते हैं?

उत्तर - 'पामर' शब्द का अर्थ है नीच, दुष्ट। 'पामर' शब्द का प्रयोग दुर्योधन के लिए किया गया है। यह शब्द हमारे विचार से सही है। दुर्योधन के कर्मों को देखते हुए उसके लिए यह संबोधन सर्वथा उचित है।

प्रश्न (ख) निहत्था बालक कौन था? उसे सात महारथियों द्वारा कब और किस प्रकार मारा गया था?

उत्तर - निहत्था बालक अभिमन्यु था। महाभारत के युद्ध में कौरवों की ओर से चक्रव्यूह की रचना की गई, जिसके सातों द्वारों पर बड़े-बड़े महारथियों को नियुक्त किया गया। पाण्डवों में केवल अर्जुन ही था जो चक्रव्यूह को भेदना (तोड़ना) जानता था, किन्तु आज वह युद्धभूमि के दूसरे छोर पर युद्ध कर रहा था। तब अर्जुन के सोलह वर्षीय पुत्र अभिमन्यु ने चक्रव्यूह भेदने का जिम्मा उठाया क्योंकि वह इसमें प्रवेश करने की कला जानता था। सभी महारथियों का सामना करते हुए वह सातों द्वारों को भेदता हुआ जब इस व्यूह में फँस गया, उसके सभी शस्त्र टूट गए वह निहत्था हो गया तब सातों द्वारों के सातों योद्धा एक साथ उस पर टूट पड़े और उसका वध कर दिया।

(ग) वक्ता के अनुसार श्रोता को कौन-सी बात अनुचित लगी थी तथा कब ?

उत्तर- यह कथन युधिष्ठिर का है और सरोवर में छुपे हुए दुर्योधन से कहा गया है। युधिष्ठिर ने दुर्योधन को पिछले समय में घटित बातें याद दिलाते हुए कहा है कि जब श्रीकृष्ण तेरे पास पाण्डवों की तरफ़ से प्रस्ताव लेकर गए थे और उन्होंने तुमसे कहा था कि बनवास के बाद उन्हें उनका आधा राज्य मिल जाना चाहिए। इस बात को दुर्योधन ने अस्वीकार कर दिया था। तब श्रीकृष्ण ने कहा था कि यदि दुर्योधन उन्हें पाँच गाँव दे दें तो भी युधिष्ठिर समझौता कर लेंगे। इस पर दुर्योधन ने क्रोधित होकर कहा था कि बिना युद्ध किए मैं एक सूई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं दूँगा।

(घ) वक्ता (युधिष्ठिर) के अनुसार श्रोता (दुर्योधन) ने धर्म की दुहाई किस प्रकार दी ?

उत्तर- सरोवर में छुपे दुर्योधन ने धर्म की दुहाई देते हुए कहा था कि इस समय मैं युद्ध करने की स्थिति में नहीं हूँ। मैं थककर चूर हो गया हूँ, मेरी सभी सेना तितर-बितर हो गई है, मेरा कवच फट गया है और मेरे सभी हथियार चुक गए हैं। इस समय मैं युद्ध करने की स्थिति में नहीं हूँ। मुझे समय दो। उसने यह भी कहा कि तुम्हें याद होगा कि मैंने भी तुम्हें तेरह वर्षों का समय दिया था।

(5) "पहले वीरता का दंभ और अंत में करुणा की भीख - - - - - - - - - - - - अधर्म से हत्या कर बधिक न कहलाएँगे।"

(पृष्ठ संख्या - 73)

प्रश्न (क) वक्ता और श्रोता कौन हैं? वक्ता ने कायरों के किस नियम का उल्लेख किया है ?

उत्तर- प्रस्तुत कथन का वक्ता युधिष्ठिर है और श्रोता दुर्योधन है। युधिष्ठिर ने कायरों के इस नियम का संकेत किया है कि पहले वे अपनी वीरता का बखान बढ़ा-चढ़ाकर करते हैं और अंत में अपने प्राण संकट में फँसे जानकर करुणा की भीख माँगते हैं। शत्रु के सामने प्राण-रक्षा की प्रार्थना करते हैं। उनके कहने का अर्थ है कि दुर्योधन भी इसी श्रेणी का कायर है।

(ख) वक्ता के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - प्रस्तुत कथन के वक्ता युधिष्ठिर हैं। वे एकांकी के प्रमुख पात्र हैं। उनके पिता राजा पाण्डु तथा माता कुंती थीं। युधिष्ठिर राजनीति एवं धर्म के कुशल ज्ञाता हैं और यही कारण है कि उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए न कभी राजनीति के नियमों के विरुद्ध कार्य किया और न कभी अधर्म के मार्ग पर चले। यही कारण था कि वे धर्मराज के नाम से पहचाने जाते थे। दुर्योधन के द्वारा दिए गए कष्ट और द्रौपदी के अपमान से उनके हृदय में दुर्योधन के प्रति द्वेष भावना उत्पन्न हो गई। वे शत्रु के साथ भी नीति के अनुसार ही व्यवहार करते हैं इसलिए दुर्योधन के सरोवर से बाहर निकल आने पर उसे लड़ने के लिए शस्त्र भी देते हैं और उसे कहते हैं कि वह (दुर्योधन) हम दोनों भाइयों में से किसी एक के साथ युद्ध करे। वनवास काल में भी वे अपने धर्म और सत्य को नहीं छोड़ते। इस तरह युधिष्ठिर धर्मप्रिय, सत्यवादी, वीर, सहृदय, नीति-निपुण और न्याय के मार्ग पर चलने वाले हैं।

(ग) वक्ता ने श्रोता से किस प्रकार की पेशकश रखी और क्यों ?

उत्तर - युधिष्ठिर ने दुर्योधन से कहा कि हम तुम्हें दया करके छोड़ेंगे भी नहीं और तुम्हारी तरह अधर्म से हत्या कर हत्यारे नहीं कहलाएँगे। हम तुम्हें कवच और अस्त्र देंगे। तुम जिस भी हथियार से लड़ना चाहो, हमें बता दो, हम वही हथियार तुम्हें देंगे। हममें से केवल एक जन (व्यक्ति) ही तुमसे लड़ेगा और इस युद्ध में यदि तुम जीत गए तो सारा राज्य तुम्हारा हो जाएगा।

इस प्रकार की पेशकश उन्होंने दुर्योधन के आगे इसलिए रखी क्योंकि वे तत्कालीन युद्ध-नियमों की उल्लंघना करके कोई अनीति नहीं करना चाहते थे और दया करके इस समय उसे छोड़ना भी नहीं चाहते थे। उन्हें इस बात का अंदेशा था कि यदि आज इस दुष्ट को छोड़ दिया तो यह फिर कुचक्र रचेगा और लड़ने के लिए आएगा। अतः युद्ध तो उससे तब भी करना पड़ेगा और सबसे बड़ा सत्य यह था कि दुर्योधन का वध किए बिना पांडवों की विजय अधूरी थी। वे दुर्योधन का वध करके अपनी विजय का जयघोष करना चाहते थे।

(घ) इस युद्ध का क्या परिणाम निकला ?

उत्तर - भीम और दुर्योधन के बीच गदा-युद्ध हुआ। महाभारत के युद्ध के अंतिम दिन दोनों योद्धा वीरता के साथ लड़ रहे थे। इस कारण कभी भीम भारी पड़ रहा था तो कभी दुर्योधन। दुर्योधन को गदा-युद्ध में निपुणता प्राप्त थी, वह हार मानने को तैयार न था। इस युद्ध में उसे भारी पड़ता देख ऐसा लगने लगा था कि दुर्योधन ही जीतेगा किन्तु इसी बीच वहाँ श्रीकृष्ण आ गए और उन्होंने भीम को दुर्योधन की जाँघ पर गदा से प्रहार करने का संकेत किया। संकेत के अनुसार भीम ने दुर्योधन की जाँघ पर भीषण प्रहार किया और कौरव-सेना के अंतिम योद्धा का भी वध कर दिया। इस प्रकार इस युद्ध में पांडवों की विजय हुई।

[अंतिम पृष्ठ]